12. ममदोट और पिंड दादनखान के मोहन

मोहन जाति का इतिहास एक पुरानी पुस्तक "पोथी राय सीघढ़" में लिखा हुआ था. मोहयाल जातियों के इतिहास उनके राय (चारण – भाट) मौखिक रूप से गा कर, पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखते थे. 1947 के पश्चात "पोथी " उपलब्ध नहीं हो सकी. सौभाग्यवश उसी पोथी के इतिहास को एक और भाट ने कविता के रूप में लिखा जो अब "जंगनामा मोहनां" के शीर्षक से हमें उपलब्ध हो सका है. यहां दिया जा रहा मोहन जाति का इतिहास मुख्यता उसी पर आधारित है.

महमूद ग़ज़नवी के आक्रमण के समय, सिंध नदी के तट पर, कालाबाग (पाकिस्तान) के समीप "धनकोट" मोहन जाति का गढ़ था. महमूद के बेटे मसूद (1030-40 ई) ने मोहन समुदाय को वहां से विस्थापित करके "अवाण" मुस्लिम कबीले को वहां बसा दिया. बहुत समय भटकने के पश्चात एक अबनाशी राम मोहन मथुरा से दिल्ली आया और उस समय के सुलतान "तिमरू शाह" के पास एक ऊंची पदवी पा ली. उस के वंशजों ने भी सुलतान के उत्तराधिकारियों के समय ख्याति प्राप्त की. उस काल में एक हीरा नन्द मोहन ने ममदोट (और फिरोज़पुर) के समीप एक दुर्ग बनाया और उसका नाम भी "धनकोट" रखा. यह अब पूरी मोहन जाति का केंद्र बन गया.

समय बीतता गया. दिल्ली में राज बदलते रहे. सुल्तानों के पश्चात भारत मुग़लों के आधीन हो गया.

औरंगज़ेब के निधन के पश्चात, बहादुर शाह के अतिरिक्त, कोई मुग़ल सक्षम उत्तराधिकारी नहीं हुआ जिसमें कुशल राज संचालन की क्षमता हो. 1719-48 ई में मुहम्म्द शाह दिल्ली के तख़्त पर था. उसके दरबार में मनसा राम मोहन एक ऊंचे पद पर आसीन था. पंजाब में स्थिति बहुत बिगड़ रही थी. (मुहम्म्द शाह के राजकाल में ही ईरान के नादर शाह ने भारत पर आक्रमण किया था और कई शताब्दियों से मुस्लिम शासकों द्वारा संचित धन, हीरे और तख्त ताऊस जैसी हर कीमती वस्तु लूट कर ले गया था.) बादशाह ने मनसा राम को कुछ उत्तरदायित्व दे कर, सेना के साथ, पंजाब भेजा जो कार्य उसने सफलता पूर्वक पूरा किया.

मनसा राम का बेटा सेवा राम (साधू राम?) और पोता जयराम थे. जयराम अति सुन्दर (चन्द्र स्वरुप) युवक था. बादशाह की आज्ञा से वह दिल्ली लाया गया और बलात धर्म परिवर्तन करके उसका विवाह एक शहज़ादी से कर दिया गया. शरीयत (इस्लामिक विधि) के अनुसार उस धर्म का कोई अनुयायी किसी गैर-मुस्लिम (काफिर) से विवाह नहीं कर सकता जब तक वह भी मुस्लिम न बन जाये .

जब इस घटना की सूचना ममदोट पहुँची तो मोहन समुदाय में मुहम्मद शाह के विरुद्ध बहुत रोष फैल गया. "हमारा मुसलमान तुध जयराम बनायो, ऐसा कभी अनर्थ दुष्ट सुनना नहीं पायो." ... "मोहन इकठे हो गए सब दीनी पाती पट, लड़ेंगे मैदान सेती ला कर अस्सी हठ". और उन्हों ने इस निर्णय का संदेश बादशाह को भेज दिया. बादशाह ने अपने एक सेना नायक हशमत खान को ममदोट पर

आक्रमण करने का आदेश दिया. इस युद्ध में मुग़ल सेना परास्त हुई और हशमत खान बन्दी बना लिया गया. इस का बदला लेने के लिए बादशाह भारी सेना लेकर आया. गोविन्द और मथुरा दास जो मोहन जाति के मुखिया थे उन्होंने, निश्चित विनाश की सम्भावना को समझते हुए भी, डट कर मुकाबला करने का निर्णय लिया. "मोहनां का सरदार अपना बन्स सदावे, ऐसा कीजो जंग नारी पुरुष जस गावे". और ऐसा ही युद्ध हुआ जो आठ पहर चलता रहा. "हटना नहीं मैदान से, जंग ओह करण सवाये, इस युद्ध मोहनां अपने दिए सीस कटाये". कोई मोहन योद्धा जीवित नहीं बचा. जंगनामा के अनुसार 288 मोहन सरदार शहीद हुए जिन में से मुख्य 72 के नाम भी दिए हैं. स्त्रियां अपने अपने पति की लाश पहचान कर सती हो गयीं. बादशाह की आज्ञा से उनको किसी ने नहीं रोका. "पिछे इक न रेहा, बादशाह ने यह मुनादी कीना, लोग सारे आखदे अब मोहन कोई न रहना". पूरी मोहन जाति का विनाश हो गया.

प्रह्लाद राय उस समय मोहन कुल का भाट था. उसने दिल्ली जा कर जयराम को, जिसके नाम अब खिज़र और ठाकर शाह हो गए थे, ममदोट के नरसंहार का वृतांत सुनाया कि सारा कबीला मारे जाने से अब वंश का अन्त हो जायेगा. खिज़र लाहौर आकर अपने पिता साधू राम से मिला और उससे फिर विवाह करने का आग्रह किया. साधू राम का विवाह, भागा मल दत्त की पुत्री, भागवन्ती से हो गया और वह वीरम में रहने लगे. "इक बूटा कई टहनियाँ, पत होवन हज़ार". साधू राम के वंशजों में वहां सारंग, मानक, फोनू, हरदास राय और राधामल के नामों का उल्लेख है.

दो तीन पीढ़ियों के पश्चात उस परिवार का एक सदस्य दिलबाग राय भेरा अपने ससुराल आगया. उसका पोता गुलाब राय पिंड दादनखान आकर "मुहल्ला मोहनां" बसा कर वहां रहने लगा. रस्सल स्ट्रैसी (दी हिस्ट्री आफ दी मोहयालज, 1911, पृष्ठ 42-43) के अनुसार, उसके समय पंजाब के विभिन्न नगरों/गाँवों में जितने मोहन परिवार थे वह सब गुलाब राय के वंशज थे. शेष कुछ परिवार जो अपने आपको ममदोट के मोहन मानते थे वह उनकी संतान थे जो ममदोट हत्याकाण्ड से किसी प्रकार बच गए थे.

पिंड दादनखान के मोहन कुल की वंशावली

पिंड दादनखान के मोहन कुल के पास एक अतुल्य विरासत है. वह है उनकी वंशावली जिस में गुलाब राय से लेकर अब तक के उनके वंशजों का विवरण है. गुलाब राय के चार बेटे थे. उनकी सभी पीढ़ियों (लग भग बारह) के नाम हैं.

यह वंशावली मेरे पिता जी के पास 1920 से थी और वह नई जानकारी एकत्रित करके इसका विस्तार करते रहते थे. पाकिस्तान बनने पर कंधे पर उठा कर जो थोड़ा सा सामान ला सके उसमें वंशावली लाना नहीं भूले. जब यह मुझे मिली तो मैं ने मोहयाल मित्र द्वारा सब परिवारों से उनकी संतान के ब्योरे मांगे और प्राप्त सामग्री भी उस में जोड़ दी. मैं ने सोचा के इसको भावी पीढ़ियों के लिये

सुरक्षित रखने के लिए इसकी प्रतिलिपियाँ कई परिवारों के पास होने चाहिए. उस की कमप्यूटर टाइप प्रतिलिपियां (ए-4 साइज़, 24 पृष्ठ, पुस्तिका) बनवा कर, जिसमें मोहन जाति का विस्तृत इतिहास भी है, जिन भाईंयों ने अपनी सूचनी भेजी थी उन सब को भेज दीं. उन में एक श्री ओम प्रकाश मोहन (पूर्व उप-प्रधान जी. एम. ऐस) भी थे. बांटने के लिए उन्हों ने भी और 50 पुस्तिका, बहुत बढ़िया मोटे कागज़ पर, छपवाईं. एक सजिल्द प्रति लिपि मैं ने जी. एम. एस में सुरक्षित रखने के लिए भी भेजी.

इस प्रकार की सामूहिक वंशावली में सभी संबंधित परिवारों में जन्म आदि के समाचारों की प्रविष्टि नियमित रूप से होती रहनी चाहिए. जो भाई इस सेवाभार का दायित्व अब लेना चाहें, वह निमंत्रित हैं. इस अंकुर को एक शताब्दी तक मेरे परिवार ने सींचा है. वृद्धावस्था से अब आगे मैं इस सेवा के लिये असमर्थ हूँ.

“जंगनामा मोहनां” उर्दू में है और इसकी जो प्रतिलिपि उपलब्ध है वह भी "पोथी राय सीगढ़" के समान लुप्त हो जायेगी. इस कारण मैं ने उसे हिंदी लिपि में लिखा. पूरा जंगनामा (173 श्लोक) और उस पर आधारित मोहन जाति का इतिहास एक (४० पृष्ट की) पुस्तिका के रूप में संकलित किया गया है. श्री ओम प्रकाश मोहन, जी. एम्. एस. के पूर्व वरिष्ठ अध्यक्ष द्वारा पुस्तिका छपवाकर मार्च 2017 में आयोजित मोहयाल सम्मेलन में इसकी प्रतियां निशुल्क वितरित की गईं. आप चाहे तो प्रतिलिपि जी. एम. एस. कार्यालय, दिल्ली से मंगा सकते हैं.

**** ****

अभी हिंदी में जंगनामा HISTORY OF MOHANS पुस्तिका (HISTORY AT A GLANCE) में उपलध है. यहां भी उसे उद्धृत किया जाए गा .